भोपाल संभागान्तर्गत सतत् समग्र मूल्यांकन के क्रियान्वयन में शिक्षकों की कठिनाइयों का अध्ययन

रवीन्द्र नाथ सक्सेना
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
भोपाल (म.प्र.) भारत.

शोध सारांश :

आज की सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक महत्व रखती है । प्राचीन काल से ही विद्यार्थियों की उपलब्धि परीक्षा किसी–न–किसी रूप में होती रही है । जब गुरू के पास विद्यार्थी ज्ञानार्जन के उद्देश्य से जाते थे, तो पहले उन्हें आश्रम में रहना पडता था, जिससे उनके ज्ञान एवं जिज्ञासाभाव की परीक्षा ली जा सके । तक्षशिला और नालंदा में जो विद्यार्थी प्रवेश पाना चाहते थे, उन्हें पहले पण्डित द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर देना होते थे। आधुनिक समय में स्कूलों में औपचारिक शिक्षा की शूरूआत से ही उपलब्धि पर विशेष महत्व दिया जाता है । जब से शिक्षा के क्षेत्र में व्यक्तिगत भिन्नता के विचार को महत्व मिला, तब से यह आवश्यक समझा जाने लगा कि बालकों की व्यक्तिगत विशेषताओं एवं उनके द्वारा अर्जित ज्ञान के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए । अतः स्कूलों में उपलब्धि के आधार पर छात्र का चयन और विभेदीकरण किया जाता है, जिससे उनके विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके । स्कूलों से बहुत से छात्र, कालेज व उच्च शिक्षा के लिए कई संस्थानों में जाते हैं । अतः यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि बालकों में आवश्यक योग्यता है या नहीं, तभी वे उच्च शिक्षा का लाभ उठा सकेंगे । स्कूलों में बालकों के उपलब्धि स्तर को निश्चित करना शैक्षिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है । प्रस्तुत शोध पत्र में इस विषयक भोपाल संभागन्तर्गत समग्र मूल्याकंन के क्रियान्वयन में शिक्षको की कठिनाईयों के अध्ययन को प्रतिपादित किया गया है।

I भूमिका

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य केवल यही नहीं है कि बालक को ज्ञान प्राप्त हो, बल्कि यह भी है कि उसका समुचित शारीरिक, संवेगात्मक, मानसिक तथा सामाजिक अनुकूलन हो। इसके लिये यह आवश्यक है कि बालक की विभिन्न विशेषताओं का मापन किया जावे । सामान्य रूप से उपलब्धि का तात्पर्य, शैक्षिक कार्यक्रम के अन्त में प्राप्त छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि से है । छात्र द्वारा विभिन्न विषयों की मुख्य सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षाओं से कुल प्राप्त अंकों को विद्यार्थी की उपलब्धि के रूप में जाना जाता है ।

हम अभी तक प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली द्वारा मुख्यतया बच्चों में बौद्धिक स्तर अथवा ज्ञानात्मक क्षेत्रों का आंकलन करते आ रहे हैं। बच्चों के अन्दर छिपी अन्य प्रतिभाओं, जैसे – सामन्जस्य, नेतृत्व, सहयोग, सृजनात्मकता, अभिरुचि, आदि का परीक्षण नहीं करते है। फलतः ये सभी गुण, प्रतिभायें, बिना पहचाने हुए दबी रह जाती है। इन प्रतिभाओं को पहचानना, निखारना और उनका मूल्यांकन किया जाना बच्चों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिये नितांत आवश्यक है। इसको दृष्टिगत् रखते हुए राज्य शासन ने 1 अप्रैल 2010 से निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 लागू करने के साथ ही परीक्षा के स्थान पर सतत् व समग्र मूल्यांकन अनिवार्य किया। इसके अन्तर्गत संज्ञानात्मक क्रियाओं को भी जोड़ा गया है। इनमें प्रोजेक्ट कार्य, मूल्य आधारित शिक्षा, जीवन कौशल आदि और संज्ञानात्मक कार्य मुख्य है। इन क्रियाओं का सत्र भर अवलोकन किया जाता है एवं मूल्यांकन किया जाता है। सतत् एवं समग्र मूल्यांकन से विद्यार्थियों की कितनी शैक्षणिक उपलब्धि हुई है, इसका आकलन करने के लिये इस समस्या का अध्ययन करना आवश्यक है।

छात्रों की कई प्रकार की उन्नति को लिखित परीक्षाओं द्वारा नहीं मापा जा सकता, अतः जॉच पूर्ण और विश्वसनीय बनाने के लिये निरीक्षण, मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षा जैसे अन्य साधन प्रमाण एकत्र करने के लिये प्रयोग में लाये जाने लगे है। छात्रों की शैक्षिक उन्नति अथवा विकास की जॉच करने के लिये व छात्रों का चौमुखी विकास जॉचने के लिए, सतत् व समग्र मूल्यांकन होना आवश्यक हैं। जिस प्रकार बिना आत्मा के मानव शरीर निरर्थक है, उसी प्रकार बिना उद्देश्य के कोई भी कार्य अनुपयोगी और महत्वहीन है।

उद्देश्यविहीन कार्य अव्यस्थित, दिशाविहीन एवं महत्वविहीन होता है। अतः किसी भी कार्य की सफलता हेतु उस कार्य का उद्देश्य होना आवश्यक है। उद्देश्य हमारे कार्य को करने की दिशा को निश्चित एवं निर्धारित करते हैं। जिससे हमें निष्कर्ष तक पहुँचने में अत्यधिक सुविधा प्राप्त होती है। अतः जीवन में कोई भी कार्य उद्देश्यरहित नहीं होता, उसी प्रकार निश्चित उद्देश्यों के अभाव में अनुसंधान कार्य को सुचारु रुप से पूर्ण नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक अनुसंधान कार्य का कोई–न–कोई उद्देश्य अवश्य होता है एवं अनुसंधान कार्य आरंभ करने के पूर्व यह आवश्यक हो जाता है, कि उसके उद्देश्यों को निर्धारित किया जावे।

II उद्देश्य तथा सीमाएँ

(क) अनुसंधान के उद्देश्य :

(i) सतत् समग्र मूल्यांकन की वास्तविक स्थिति का अध्ययन करना।

(ii) शिक्षकों को सतत् समग्र मूल्यांकन के क्रियान्वयन में आ रही कठिनाइयों का अध्ययन करना ।

(iii) शिक्षकों को सतत् समग्र मूल्यांकन के क्रियान्वयन में आ रही कठिनाइयों के निवारण हेतु सुझाव प्राप्त करना।

(iv) सतत् समग्र मूल्यांकन के घटकों का अध्ययन करना।

जैसे :

- शैक्षिक क्षेत्र का अध्ययन।
- सहशैक्षिक क्षेत्र का अध्ययन।
- व्यक्तिगत व सामाजिक गुणों का अध्ययन करना।

(ख) **अध्ययन की सीमाएँ** : प्रस्तुत शोध में समय एवं साधनों की कमी के कारण अध्ययन की कुछ सीमाएं है, जो निम्नप्रकार से है –

(i) इस अध्ययन में न्यादर्श के रुप में भोपाल संभाग के सभी 08 जिलों को शामिल किया गया है।

(ii) न्यादर्श प्रत्येक जिले के 5 शहरी, व 5 ग्रामीण शालाओं से लिया गया ।

(iii) प्रत्येक शाला से 01 प्रधानाध्यापक तथा 02 शिक्षको को न्यादर्श के रुप में लिया है।

III परिकल्पनायें

(क) सतत समग्र मूल्यॉकन प्रशिक्षित शिक्षकों को प्रदत्त कार्ययोजना के क्रियान्वयन से मूल्यॉकन प्रक्रिया पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।

(ख) प्रदत्त कार्ययोजना से शिक्षकों की मूल्यॉकन अभिवृत्ति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है ।

IV न्यादर्श तथा उपकरण

(क) न्यादर्श : प्रस्तुत शोधकार्य में मुख्य उद्देश्य सतत समग्र मूल्यांकन के लिये प्रशिक्षित शिक्षकों को प्रदत्त कार्ययोजना के क्रियान्वयन में आ रही कठिनाईयों का अध्ययन कर निवारण हेतु सुझाव प्रदान कर रहा है । अतः भोपाल संभागान्तर्गत समान्त 08 जिलों से Stratified Random Method (स्तरीय यादृच्छिक विधि) द्वारा 10 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का चयन इस प्रकार किया है कि अधिकतर विकासखण्डों के विद्यालय चयनित हो सकें । इस प्रकार कुल 80 माध्यमिक विद्यालय चयनित किये गये। प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से 01 प्रधान अध्यापक 02 शिक्षकों को चयन कर कुल 240 प्रधान अध्यापक / शिक्षक को लिया गया ।

(ख) उपकरण : माध्यमिक स्तर पर पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए शिक्षक प्रश्नावली का निर्माण किया गया, जिसमें प्रश्नों की कुल संख्या 29 है । प्रश्नों के माध्यम से शैक्षणिक, सहशैक्षिक तथा विद्यार्थियों के व्यक्तिगत सामाजिक गुणों के मूल्यॉकन के विषयक अभिमत प्राप्त किये गये हैं, जो कि शोध के उद्देश्य पूर्ति में सहायक है

सारणी क्रं. 1

प्रश्न		अभिमत		प्रतिशत
1	वर्ष 2009–10 तक सचालित परम्परागत मूल्यॉकन एवं वर्तमान सतत् समग्र मूल्यॉकन में क्या अन्तर है? बिन्दुवार लिखिए।	1.	सतत समग्र मूल्यांकन से शिक्षकों पर अधिक भार पडता है	80
		2.	प्रक्रिया जटिल है	60
		3.	सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश होता है	80
		4.	विद्यार्थियों को बोझिल लगता है	70

आरेख क्रं. 1

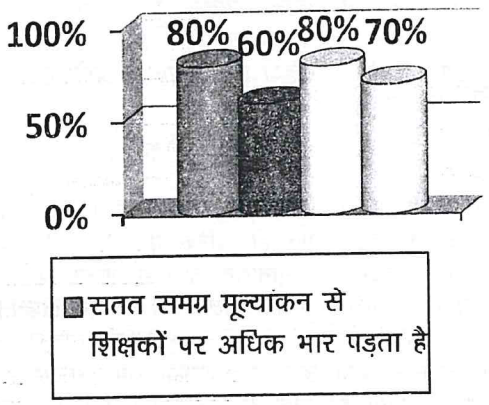

V विश्लेषण

सारिणी क्र. 1 एवं आरेख क्र. 1 से स्पष्ट होता है कि वर्तमान मूल्यांकन (परम्परागत) की तुलना में सतत समग्र मूल्यांकन छात्र एवं शिक्षकों को बोझिल लगता है तथा इसकी प्रक्रिया जटिल है । इसके साथ ही यह सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश करता है, इसके पक्ष में 80 प्रतिशत अभिमत प्राप्त हुए हैं ।

सारणी क्रं. 2

प्रश्न		अभिमत		प्रतिशत
2	सतत् समग्र मूल्यॉकन प्रक्रिया में अन्य गतिविधियों के मूल्यॉकन से शैक्षिक मूल्यॉकन में कौन–कौन सी कठिनाईयॉ आ रही है? बिन्दुवार विवरण दीजिए।	1.	सतत समग्र मूल्यांकन से शैक्षणिक गतिविधियाँ प्रभावित होती हैं।	90
		2.	अन्य गतिविधियों का मूल्यांकन विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थित से कठिन।	95
		3.	छात्र संख्या अधिक होने से वास्तविक मूल्यांकन कठिन होता है।	75
		4.	शिक्षकों की कमी से मूल्यांकन प्रभावित होता ।	60

ISSN : 2349-4190

आरेख क्रं. 2

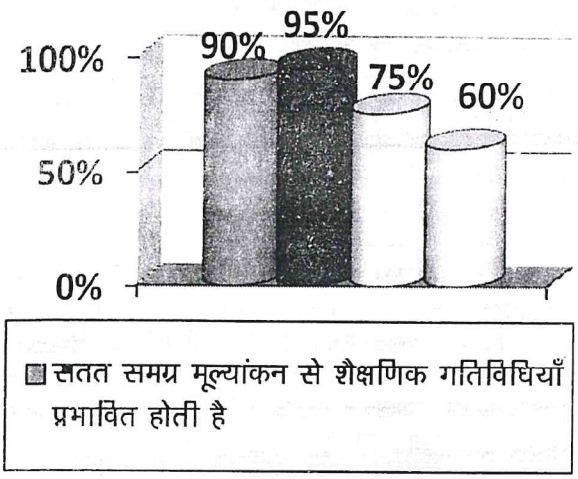

सारणी क्र. 2 एवं आरेख क्र. 2 से यह स्पष्ट हो रहा है कि 90 प्रतिशत शिक्षकों के अनुसार सतत समग्र मूल्यॉकन से शैक्षणिक गतिविधियॉ प्रभावित होती हैं । 95 प्रतिशत शिक्षकों का मत है कि विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति से मूल्यॉकन में कठिनाई आती हैं। 60 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है शिक्षकों कि कमी होने के कारण मूल्यॉकन पर प्रभाव पड़ता है ।

सारणी क्रं. 3				
प्रश्न		अभिमत		प्रतिशत
3.	शैक्षिक मूल्यॉकन में आनेवाली कठिनाईयों का बिन्दुवार निवारण आपके द्वारा हो पाता है, या नहीं?	1.	पूरी तरह नहीं हो पाता है	80
		2.	आंशिक हो पाता है	10
		3.	उदासीन	10

आरेख क्रं. 3

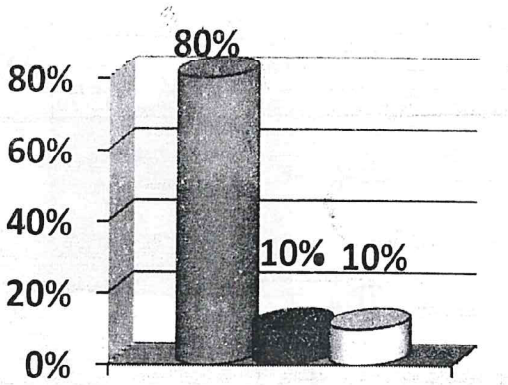

सारणी क्र. 3 एवं आरेख क्र. 3 से स्पष्ट है कि 80 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि शैक्षिक मूल्यांकन में आनेवाली कठिनाईयों का निवारण नही हो पाता हैं। 10 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कठिनाइयों का निवारण आंशिक रूप से हो पाता हैं, तथा 10 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत स्पष्ट नहीं हैं, वे इस विषय में कुछ नहीं कह सकते हैं

सारणी क्रं. 4				
प्रश्न		अभिमत		प्रतिशत
4.	यदि नहीं, तो निवारण हेतु आपके बिन्दुवार क्या सुझाव है?	1.	शिक्षकों की कमी दूर की जावे।	70
		2.	छात्रों की कक्षा में संख्या निश्चित की जावे।	65
		3.	छात्रों की नियमित उपस्थिति बनाई जावे।	90

ISSN : 2349-4190

आरेख क्रं. 4

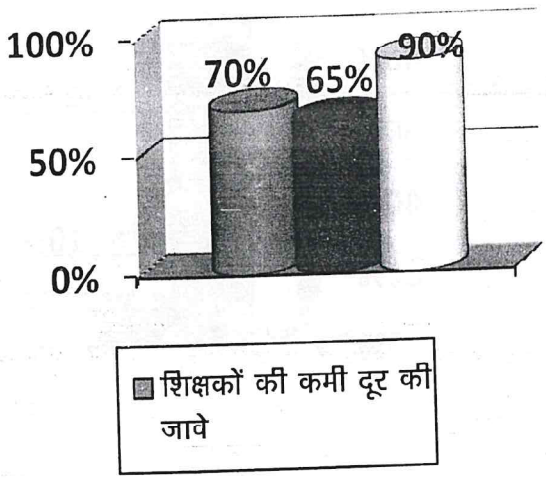

सारणी क्र. 4 एवं आरेख क्र. 4 से स्पष्ट है कि शैक्षिक मूल्यांकन में आनेवाली कठिनाईयों के निवारण हेतु 70 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि विद्यालयों में शिक्षकों की कमी को दूर किया जाए । 65 प्रतिशत शिक्षकों का विचार है कि छात्रों की कक्षा में संख्या सीमित की जावे तथा 90 प्रतिशत शिक्षकों का अभिमत है कि छात्रों की नियमित उपस्थिति बनाई जावे ।

VI मुख्य सम्प्राप्तियॉ एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के उपरान्त शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों के विश्लेषण निम्न के आधार पर लिखित निष्कर्ष दिये गये हैं :

(क) सतत समग्र मूल्यांकन, प्रक्रिया जटिल होने से शिक्षकों पर कार्य का भार अधिक हो गया है, जिससे शैक्षणिक गुणवत्ता प्रभावित होती है ।

(ख) विद्यार्थियों को भी सतत मूल्यांकन बोझिल लगता है । वह अन्य गतिविधियों के कारण, शैक्षणिक गतिविधि में पिछड़ा रहता है ।

(च) अधिकतर शिक्षकों का मत प्राप्त हुआ है कि सतत समग्र मूल्यांकन प्रक्रिया में सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का समावेश होने से वास्तविक मूल्यांकन होता है

(छ) शिक्षकों को प्रदत्त कार्ययोजना के अनूरूप शिक्षक कार्य करने में असहज महसूस करते हैं । कार्य योजना को और सरल तथा विद्यार्थियों के अनुकूल बनाना चाहिए।

(ज) मूल्यांकन कार्य में दक्षता हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए

VII अवरोधक

अध्ययनकर्ता द्वारा इस अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से पाया गया कि सतत समग्र मूल्यांकन वर्तमान परिस्थितियों में विद्यालय में अधिक प्रभावी नहीं हो सकता क्योंकि :

(क) विद्यालयों में कक्षाओं में छात्र–छात्राओं की संख्या बहुत अधिक होती है।

(ख) कक्षाओं में विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति पर पूर्णतः रोक नहीं लग पा रही है

(ग) विद्यालयों में कुशल मूल्यांकनकर्ताओं (शिक्षकों) का अभाव सतत समग्र मूल्यांकन की सफलता में बाधक हैं।

VIII भावी शोध सम्भावनायें

(क) सतत समग्र मूल्यांकन के लिये प्रशिक्षित शिक्षकों को प्रदत्त कार्य योजना के क्रियान्वयन का अध्ययन मात्र भोपाल संभाग के कुछ चयनित शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों से जानकारी प्राप्त कर किया गया है । विद्यालय एवं शिक्षकों की संख्या बढ़ाकर निष्कर्ष की गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है ।

(ख) सतत समग्र मूल्यांकन के विषय में शिक्षकों को प्रदत्त कार्ययोजना सम्बंधी अध्ययन किया गया है -। कार्य योजना से अलग हटकर सतत समग्र मूल्यांकन की प्रभावशीलता का अध्ययन किया जा सकता है ।

(ग) शासकीय विद्यालयों की अशासकीय विद्यालयों से तुलना कर सतत समग्र मूल्यांकन प्रक्रिया की गुणवत्ता ज्ञात की जा सकती है ।

(च) सतत समग्र मूल्यांकन का परम्परागत मूल्यांकन से तुलनात्मक अध्ययन क्षेत्र परिवर्तित कर विभिन्न चरों की सहायता से किया जा सकता है ।

संदर्भ ग्रंथ

{1} डॉ. अस्थाना बिपिन (1990) : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

{2} गैरिट हैनरी ई. (1989) : शिक्षा ओर मनोविज्ञान में सॉख्यिकी के प्रयोग, कल्याणी पब्लिशर्स, लुधियाना।

{3} पाठक पी.डी. (2007) : शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।

{4} प्रो. लाल रमन बिहारी (2010) : शिक्षा के दार्शनिक आधार, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

{5} डॉ. शर्मा आर.ए. (2006) : विद्यालय प्रबंधन एवं शिक्षणशास्त्र, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ ।

{6} डॉ. शर्मा. आर.ए. (2011) : शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर.लाल, बुक डिपो, मेरठ ।

{7} सिंह अरूण कुमार (2011) : शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, दिल्ली।

{8} राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल : 'सतत् समग्र मूल्यांकन की मार्गदर्शिका।